सानुवाद

श्रीमहाप्रभुग्रन्थावली

(१) शिक्षाष्टकं (२) प्रेमामृतरसायनस्तोत्रं
(३) युगलपरिहारस्तोत्रं
(४) श्रीराधारसमञ्जरी

प्रेमावतार
श्रीमन्महाप्रभुकृष्णचैतन्यदेवमुखपद्म
विनिर्गता

प्रथमावृत्ति १०००
संवत २००६
बसन्त पञ्चमी
न्यौछावर ।-)

प्रकाशक व अनुवादक:-
कृष्णदास बाबा,
कुसुमसरोवर, (गोवर्द्धन)

दो शब्द—

देखौ आली गौर मेघ उल्लास ।
श्रीअद्वैत पवन पुरवाई करुना विजुरी विलास ॥ १ ॥
अन्तर श्याम घटा प्रगटत है अरुनांवर परकास ।
नामधुनी गरजत प्रेमामृत बरसत हैं रसरास ॥ २ ॥
कबहूँ परत वैवर्ण्य इन्द्रधनु धुरवा अश्रु निकास ।
उपजत है रोमांच सस्य वहु निरखत पूरै आस ॥ ३ ॥
पोखत चातिक रसिक भक्तजन हरत हैं विरह हुतास ।
नव अनुराग नदी उमगी है कर्म धर्म तट नास ॥ ४ ॥
देत बहाय त्रास लज्जा तृन कपट पंक नहिं तास ।
श्री बृन्दाबन प्रेमसिंधु मिल गुन मञ्जरी सुखवास ॥ ५ ॥

आज प्रेमावतार, प्रेमदाता, करुणावरुणालय, नाम संकीर्त्तन के पिता, राधाराधारमण मिलित विग्रह, जगन्नियन्ता, जगदाधार, भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के मुखकमल विनिर्गत स्तोत्र चतुष्टयी प्रकाशित हो रही है। श्रीप्रभु ने जगत् में अवतार लेकर ब्रह्मादुर्ल्लभ जो सर्वोच्च महान् प्रेम धन को प्राणिमात्र में प्रदान किया है उससे जगत् सर्वकाल के लिये अवश्य आभारी रहेगा। यदि श्रीमहाप्रभु पृथिवी में प्रगट नहीं होते तो प्रेमवस्तु को कौन जानता ? कलिकाल में नाम संकीर्त्तन ही एक मात्र परम उपाय है, इसे कौन समझता ? श्रीवृन्दाबन रस माधुरी में कौन का मनः निमग्न होता ? तथा श्री राधिका को कौन जानता ? उपरोक्त समस्त वस्तु श्रीमहाप्रभु की देन है।

इस विषय में बृन्दावनशतककार श्रीप्रबोधानन्द सरस्वति ने श्रीचैतन्यचंद्रामृतनामक स्वनिर्म्मित ग्रंथ में कहा है—

प्रेमा नामाद्भुतार्थः श्रवणपथगतः कस्य नाम्नां महिम्नः,

को वेत्ता कस्य वृन्दावनविपिनमहामाधरीषु प्रवेशः ।
को वा जानाति राधां परमरसचमत्कारमाधुर्य्यसीमा
मेकश्चेतन्यचंद्रः परमकरुणया सर्वमाविश्चकार ॥

इस पर पदकर्त्ता की वाणी भी—

यदि गौराङ्ग ना हत किमेने हइत केमने धरिताम दे ।
श्रीराधार महिमा, रससिंधु सीमा जगते जानात के ॥
मधुर बृंदाबिपिन माधुरी प्रवेश चातुरी सार ।
वरज युवती भावेर भकति शकति हईत कार ॥

श्रीकृष्ण तो केवल प्रेम का आस्वादन करने के कारण ही प्रभु हैं । उसी प्रेम महाधन का प्राणिमात्र को आस्वादन कराने के कारण वे महाप्रभु हैं । सब कोई उन्हें महाप्रभु करके पुकारते थे । वे रूढ़िबृत्ति से महाप्रभु करके प्रसिद्ध हुए । प्रेमावतार आप की प्रेम पराकाष्ठा का कहाँ तक वर्णन हो सकता है । वे कभी तो उत्कट प्रेम के आवेग में आकर कूर्म्माकार हो जाते थे, कभी श्रीविग्रह के जोड़ समूह के छूट जाने पर लम्बायमान हो जाते थे, कभी तपायमान सुवर्ण पिंड के बराबर बन जाते थे, तो कभी नेत्र कमल से पिचकारी की तरह इस प्रकार अश्रुधारा छूटती थीं, जिससे कि पृथ्वी में पनारे बह जाते थे । इस विषय में श्रीप्रियादास जी ने कहा है—
"आवै कभू प्रेम हेम पिंडवत तन होत कभू संधि संधि छूटि अंग बढ़ि जात है । और एक न्यारी रीति अश्रु पिचकारी मानौ उभै लाल प्यारी भाव सागर समात है ।"

यहीं उनके लिये प्रयुक्त महाप्रभु शब्द का सार्थक होता है । अन्य अन्य अवतारों में इस प्रकार होना तो दूर रहा स्वयं उनके कृष्णस्वरूप में भी इसका अभाव था । स्वयं ब्रजविहारी, नन्दनन्दन उस अभाव की पूर्त्ति के लिये ही तो गौरांग रूप से

प्रकट हुए थे। वह यह था कि-श्रीराधिका का प्रेम कैसा है? उस प्रेम में कैसी मधुरिमा है और उस प्रेम सुख में आकर रधिका जी कैसी विभोरा हो जाती थीं? इने तीनों वाञ्छाओं की पूर्ति के लिये श्री नन्दनन्दन व्याकुल हो जाते थे। इसलिये ही आप राधा भाव से विभावित होकर उनकी सुवर्ण गौर कान्ति से अपने को ढँक कर मनोहर गौराङ्ग रूप से नवद्वीप में प्रकट हुए, और भी श्रीकृष्ण की एक महान् इच्छा थी कि मैं उसी राधा प्रेम को प्राणिमात्र में वितरण करूँगा, जिसे कभी किसी ने नहीं दिया। फिर उस समय युगावतार का समय भी आ पड़ा। कलिकाल का एक मात्र धर्म्म नाम संकीर्त्तन है। उसी के द्वारा ही प्रेम वितरण हो सकता है, ऐसा विचार करके युगावतार को साथ में ले भक्त भाव से स्वयं भक्ति के आचरण करते हुए वह प्रभु ने सब को सिखाया कि कलियुग में नाम कीर्त्तन के द्वारा ही प्रेम प्राप्त हो सकता है:—

निज कृष्ण भये गौराङ्ग महाप्रभु भाव राधिका लीनोरी।
दर्पन में अवलोकि मुख निज कुंवर मनोरथ कीनोरी॥
ए विधि आस्वाद करै अपनी सुख परहित में चित दीनोरी।
श्री गोपालदास प्रभु प्रगटे प्रेम सुधारंगरस भीनोरी॥

भक्तमाल के टीकाकार श्रीप्रियादास जी के गुरु, परमरसिक, कवि चूडामणि श्रीमनोहर जी के एक सुललित पद दे कर अपनी विज्ञप्ति शेष करते हैं—

निशि दिन इहै शोच मेरे उर।
कोन काज ब्रजराज कुवरवर धार्‌यौ गौर कलेवर॥ १॥
सुख को परम सदन वृन्दावन परिजन निपट सनेह।
सो सुख छाडि वसत नदीया पुर समझि परत नहीं यह॥ २॥
संकीर्त्तन रस संतत विलसत कौन माधुरी तामें।

भोगी रस सृंगार सार तजि लोभी होय रहे या में ॥ ३ ॥
जा को भाव करि ऐसी सो सबतें अधिकाई ।
इह अनुमान मनोहर तन मन चरण कमल वलि जाई ॥ ४ ॥

अहो इस विषय को लेकर परमरसिका देवी मीरा ने कैसा सरस पद गाया है-यह पद मीरा के पद संग्रह में गीता गोरखपुर से छप चुका है—

अबतौ हरी नाम लौ लागी ।
सब जग को यह माखन चोरा नाम धरयौ वैरागी ॥ १ ॥
कित छोड़ी वह मोहन मुरली कित छोड़ी सब गोपी ।
मुंड मुँडाई डोरि कटि बाँधी माथे मोहन टोपी ॥ २ ॥
मात यशोमति माखन कारण बाँधे जाके पाँव ।
श्याम किशोर भयो नवगोरा चैतन्य जाके नाँव ॥ ३ ॥
पीताम्बर को भाव दिखावे कटि कौपीन कसै ।
गौर कृष्ण की दासी मीरा रसना कृष्ण बसै ॥ ४ ॥

महाप्रभु के चरण उपासक, अनेक पदों के रचयिता, रसिकवर आनन्दघन जी ने कहा है—

श्री चैतन्य दयानिधि धीर ।
कलिकालीन मलिन दीन जन पावन करन परम गंभीर ॥
पूर्णचंद्रनदनंदन को उदै सदा उमगन की भीर ।
बोहित नाव चढ़ाये बहुत जन प्रेम मगन कर पठाये तीर ॥
भाव तरंग अभंग विभंग गति महामधुर रसरूप शरीर ।
निज जन रतन जाल युत राजत धुन हुंकार उसांस समीर ॥
त्रिविध तापते जरे जीव जे शीतल किये परस पद नीर ।
करुना दृष्टि बृष्टि सों सींचे जय जय आनन्द मुदीर ॥

आपका प्रकाटयकालसं० १५४२तथा अन्तर्द्धानका समय सं० १५६० है । फाल्गुन पूर्णिमा सन्ध्या के समय ग्रहण के योग में आपका

शुभ प्रादुर्भाव है। पिता मिश्रपुरन्दर श्रीजगन्नाथ, माता श्रीशची-देवी हैं। बाल्य काल में विविध बालक्रीड़ा व विद्याविनोदादिक परम उपासनीय वस्तु हैं। कैशोर व नवयौवन में उन प्रभु के द्वारा नवद्वीप व समस्त बंगाल में हरिनाम संकीर्त्तन से गूँज उठा और समस्त जगत् प्रेम का पात्र बना। सब कोई वैष्णव हुए, चौबीस वर्ष की अवस्था में आप सन्यासाश्रम का ग्रहण कर नीलाचल में आये। छै वर्ष यावत् गमनागमन, तीर्थ पर्य्यटन, वृन्दावन यात्रादिक लीलाएँ कीं। शेष अठारह वत्सर नीलाचल में रहकर स्वरूप गोस्वामी, रायरामानन्दादिक अन्त-रङ्ग पार्षदों के साथ राधा भाव का मधुर आस्वादन किया।

तब जगत् प्रेमवन्या में बह गया। इधर आपने रूप, सनातनादिक गोस्वामिगणों में अपनी शक्ति का संचार कर ब्रज के लिये भेजा। वे सब ब्रज में आकर लुप्ततीर्थों का प्राकट्य, तथा अनेकानेक ग्रंथों का निर्माण के द्वारा राधातत्त्व, कृष्णतत्व, प्रेमतत्त्व, रसतत्त्व, ब्रजतत्त्वादिकों का प्रचारण कर भक्ति की महिमा को सर्वत्र फैलाने लगे! महाप्रभु के स्वनिर्म्मित मतव्यञ्जक कोई विस्तृत ग्रन्थ नहीं हैं। उन्होंने विद्याविलास के समय कलापव्याकरण की एक टीका लिखी थी, परंतु वह प्राप्त नहीं है। आपने न्याय की एक टीका की भी रचना की थी, किन्तु उसे रघुनाथशिरोमणि के जो कि उस समय जगत् प्रसिद्ध अद्वितीय नैयायिक पण्डित थे उनके मनस्ताप समझ कर नौकाबिहार के समय गंगागर्भ में बहा दिया था। शिक्षाष्टक उनके मुख पद्म विनिर्गत, जग प्रसिद्ध वैष्णवों का परम धन है।

"निजप्रेमामृत व कृष्णप्रेमामृत" स्तोत्र उन्हीं प्रभु के मुख पद्म से विनिर्गत हुआ था। सर्वत्र प्रचीन प्रतियों में

श्रीकृष्णचैतन्यदेव के नाम से यह देखने में आरहा है। उदाहरण रूप:—

१—काशी सरस्वती विद्यापीठ—नं० ६४६ (१३) प्रेमामृतस्तोत्र।
"इति श्रीकृष्णचैतन्यमुखपद्मविनिसृतं निजप्रेमामृतं स्तोत्रं सम्पूर्णं।

२—वराहनगर—श्रीभागवताचार्य्य पाटवाडी, ग्रन्थागार, (कलिकत्ता) महाप्रभुकृत—नं० ४७।

३—काशी, नागरी प्रचारिणी सभा—नं० १७१२। कृष्णचैतन्य-देवविरचित प्रेमामृतस्तोत्रं।

४—वृन्दावन, राधारमण जी मन्दिर, गोस्वामि श्रीमधुसूदन सार्वभौम के ग्रन्थागार—

"निजप्रेमामृतस्तोत्रं—श्रीकृष्णचैतन्यदेव-मुख-पद्म विनिर्गतं"। इसमें श्रीवल्लभाचार्य्य जी के आत्मज श्रीविट्ठलेश जी के द्वारा विरचित अति सुन्दर सुविस्तृत व्याख्या है। इस व्याख्या का प्रारम्भ में—"अथ श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र-मुख पद्म - विनिसृतं निजप्रेमामृतं लिख्यते" अन्त में—"इति श्रीमच्छ्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र मुखपद्माद्विनिसृतं निजप्रेमामृत व्याख्या समाप्तम्"।

५—श्रीवृन्दाबन गोस्वामि श्रीबनमालीलालजी के ग्रन्थागार में-
"इति श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्रमुखपद्म विनिसृत निजप्रेमामृतस्तोत्रं"

६—जयपुर—श्री सरसमाधुरी जी के द्वारा प्रकाशित नित्यपाठ संग्रह में—श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्रमुखपद्मविनिर्गत "निज प्रेमामृतस्तोत्रं"

७—मेरे पास मौजूद एक प्राचीन प्रति में—'श्रीकृष्णचैतन्य-चन्द्रमुखपद्मविनिर्गत "निजप्रेमामृतस्तोत्रं"

इन सब प्राप्त प्रमाणों से निःसन्देह यह सिद्ध हुआ है

कि यह स्तोत्र महाप्रभु कृष्णचैतन्यदेवके द्वारा विरचित है। अन्य किसी के द्वारा नहीं है । यदि अन्यत्र कोई किसी के नाम से छाप दिया हो यह ठीक नहीं समझा जायगा । उनके द्वारा कहा हुआ युगलपरिहार नामक स्तोत्र भी हमें प्राप्त हो रहा है। हम भी "नित्यक्रियापद्धति" नामक संगृहीत पुस्तक में शिक्षाष्टक, निजप्रेमामृतस्तोत्र, युगलपरिहार स्तोत्र का प्रकाशित कर चुके हैं। वराहनगर ग्रंथमन्दिर श्रीभागवताचार्य्य पाटवाडी और अन्यत्र बहु स्थलों में से यह स्तोत्र महाप्रभु के नाम से मिलता है। परमाराध्य श्रीगुरुदेव बाबाजिमहाराज के द्वारा प्रकाशित "साधककंठमाला" नामक नित्यक्रिया संगृहित पुस्तक में शिक्षाष्टक, प्रेमामृत स्तोत्र, युगलपरिहारस्तोत्र कई संस्करण में मुद्रित हो चुके हैं।

"राधारसमञ्जरी" नामक श्रीराधा महिमा परक एक स्तोत्र भी प्राप्त हुए हैं। बृन्दाबन श्रीगोस्वामि विजयकृष्णजी के पुस्तकालय में से उनके आत्मज गोस्वामि अतुलकृष्ण जी के द्वारा दो प्राचीन प्रतियाँ प्राप्त हुईं। गोस्वामि नीलमणि के ग्रंथागार भक्तिविद्यालय वृन्दाबन में एक प्रति, गोस्वामि श्रीकृष्णचैतन्यजी (पाटना)के पुस्तकालय में एक प्रति,श्रीगोस्वामि राधाचरणजी (बृन्दाबन) के पुस्तकालय में एक प्रति, वराहनगर, श्रीभागवताचार्य्यजी के पाटवाडी में एक प्रति, गिरिराज तरहटी निवासी बाबा श्रीअच्युतानन्ददास जी के पास एक नूतन प्रति मौजूद है। उन सब प्रतियों को देखकर मन में तीव्र इच्छा हुई कि इसे भी महाप्रभुग्रंथावली में प्रकाशित करें । गुरुगौराङ्गगणों की पुनीत कृपा से बहुत दिनों की यह वासना आज पूर्ण हुई है। इसमें केवल मूलानुसार हिन्दिभाषा रखी गई है। आशा है प्रेमीरसिक गण इस महाप्रभुग्रंथावली को अपनाकर कंठहार

कर रखेंगे। इच्छा तो प्रबल थी कि महाप्रभु गौराङ्गदेव के द्वारा विरचित निजप्रेमामृत व कृष्णप्रेमामृत स्तोत्र की श्रीविट्ठलेश की टीका के साथ छपाने की। परन्तु यह स्तोत्र श्रीविट्ठलेश की टीका के साथ मणीलाल इच्छाराम देशाई गुजराती पत्रिका आफिस बम्बई में छप चुका है, ऐसा सुनकर छपाने का विरत रहा। अभी तक यह पुस्तक मेरे हस्तगत नहीं हुई है। हाँ प्राचीन हस्तलिपी पुस्तक का दर्शन सौभाग्य मिला है। इति।

परिशेष में हम मथुरा, गौघाट, लक्ष्मीगलि निवासी पण्डित श्रीनारायण देव कौशिकों को धन्यवाद देते हैं कि आपने इस ग्रंथ के अनुवाद संशोधन कार्य्य में सहाय देकर चिरबाधित किया।

वैष्णवदासानुदास—

कृष्णदास।



★ महाप्रभुग्रन्थावली ★

(१ शिक्षाष्टकं

चेतो दर्पणमार्ज्जनं भवमहा-दावाग्नि-निर्व्वापनं
श्रेयः कैरवचन्द्रिका-वितरणं विद्यावधू-जीवनम्।
आनन्दाम्बुधिवर्द्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्त्तनम्॥ १ ॥
नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति,
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।
एतादृशि तव कृपा भगवन्ममापि,
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः॥ २ ॥
तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः॥ ३ ॥

जो मानस दर्पण की मलिनता को दूर करता है तथा जो संसार रूप दावाग्नि का निवारक है, जो मंगल मार्ग रूप श्वेत पद्म की शुभ्रज्योत्स्ना रूप तथा पराविद्या रूप वधू का प्राणात्मा स्वरूप है, जिसके श्रवण से आनन्द सागर की वृद्धि होती है तथा जिसके पद पद में परिपूर्ण अमृत का आस्वादन होता है उस सकल आत्मा स्निग्धकारी श्रीकृष्ण नाम संकीर्त्तन की सर्वोपरि जय हो॥ १ ॥

हे भगवन्! आपकी इस प्रकार की करुणा है कि आपने आपके नाम समूह में अपनी समस्त शक्ति अर्पण कर दीनी है और वह नाम सकल के स्मरणादि करने के विषय में कोई देश, काल, नियम नहीं रखा है। परन्तु मेरा ऐसा दुर्दैव है कि उन नामों में अनुराग नहीं हो रहा है॥ २ ॥

अब जिस प्रकार नाम ग्रहण करने से प्रेम प्राप्ति होता

न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये ।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि ॥४॥
अयि नन्दतनूज किङ्करं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ ।
कृपया तव पादपङ्कजस्थित—धूलि—सदृशं विचिन्तय ॥५॥
नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गदरुद्धया गिरा ।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति ॥६॥
युगायितं निमिषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।
शून्यायितं जगत् सर्व्वं गोविन्द—विरहेण मे ॥ ७ ॥

है उसे कहते हैं—तृण से भी नीच, (नम्रता) वृक्ष से भी सहनकारी होकर निरभिमान से दूसरे को मान देते हुए सदा हरिकीर्त्तन करें ॥ ३ ॥

अब श्रीमन्महाप्रभु आपने को भक्तावेश में कहते हैं—हे जगदीश ! मैं धन, जन, सुन्दरी, कविता की कामना नहीं करता हूँ, किन्तु आपसे यह प्रार्थना करता हूँ कि जन्म जन्म तुम्हारे में मेरी अहैतुकी भक्ति हो ॥ ४ ॥

हे नन्दनन्दन ! विषम भवसागर में निमग्न मुझे अपने पादपद्म स्थित रजः कणिका न्याय दास्य रूप से ग्रहण कीजिये यह प्रभु की दैन्योक्ति है ॥ ५ ॥

हे प्रभो ! कब तुम्हारे नाम ग्रहण करने में मेरी ऐसी दशा होगी । विगलित अश्रुधाराओं से नयन युगल भर जायगा तथा गद्गद् वाणी से वदन रुक जाएगा और पुलकावली से सकल शरीर खचित (युक्त) हो जायेगा । यह भी दैन्योक्ति है ॥६॥

अब प्रभु विरह भाव से कहते हैं:—श्री गोविंद के विरह में मेरे लिये निमेषकाल युग की तरह हो रहा है, नयनों से वर्षाकालीन वारिधारा सदृश निरन्तर अश्रुधारा बह रहा है और समस्त जगत् शून्यमय हो रहा है ॥ ७ ॥

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु,
मामदर्शनान्मर्म्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो,
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः॥ ८॥

॥ इति श्री गौरचन्द्र मुखपद्मविनिर्गतशिक्षाष्टकं सम्पूर्णम्॥

(२) प्रेमामृतरसायनस्तोत्रं

नमो ब्रजराजकुमाराय।
एकदा कृष्णविरहाद्ध्यायन्ती प्रियसंगमम्।
मनोवाष्पनिरासार्थं जल्पतीह मुहुर्मुहुः॥ १॥
कृष्णः कृष्णेन्दुरानन्दो गोविन्दो गोकुलोत्सवः।
गोपालो गोपगोपीशो वल्लवेन्द्रो ब्रजेश्वरः॥ २॥

अब श्रीमन्महाप्रभु किशोरी भावाविष्ट में अपने को कहते हैं। हे सखि ! वे हरि मुझे आलिंगन प्रदान कर चरणरत किंकरी करें व अत्यन्त दुःख दे कर पीश डारें किम्बा अदर्शन से मर्म्माहत करें अथवा लम्पट होकर जहाँ तहाँ विलास करें किंतु वे मेरे ही एक मात्र प्राणनाथ ही हैं अपर कोई नहीं हैं॥८॥

इति शिक्षाष्टक का अनुवाद।

एक समय प्राणवल्लभ श्रीकृष्ण के विरह से व्यथित-हृदया श्रीराधा हृदय स्थित दुःखाग्नि को दूर करने के लिये उन्हीं श्रीकृष्ण के प्रियसंगम को ध्यान करती हुई बार बार श्याम-सुन्दर की विभिन्न लीला रूप स्वरूप वाली नामावली का उच्चारण करने लगीं॥ १॥

कृष्ण, कृष्णचन्द्र, आनन्दस्वरूप, गोविन्द, गोकुल के ाल, गोपाल, गोपियों के ईश्वर, वल्लवेन्द्र, ब्रज के ईश्वर॥२॥

प्रत्यहं नूतनतरस्तरुणानन्दविग्रहः ।
आनन्दैक सुख-स्वामी सन्तोषाक्षयकोषभूः ॥ ३ ॥
आभीरिकानवानन्दः परमानन्दकन्दलः ।
वृन्दावनकलानाथो व्रजानन्दनवांकुरः ॥ ४ ॥
नयनानन्दकुसुमो व्रजभाग्यफलोदयः ।
प्रतिक्षणातिसुखदो मोहनो मधुरद्युतिः ॥ ५ ॥
सुधानिर्यासनिचयः सुन्दरः श्यामलाकृतिः ।
नवयौवनसम्पन्नः श्यामामृतरसाकरः ॥ ६ ॥
इन्द्रनीलमणिस्वच्छो दलिताञ्जनचिक्कणः ।
इन्दीवरसुखस्पर्शो नीरदस्निग्धसुन्दरः ॥७॥
कर्पूरागुरु कस्तूरी कुंकुमाक्तांगधूसरः ।
सुकुञ्चितकचन्यस्तोल्लसच्चारुशिखण्डकः ॥ ८ ॥

सर्वदा नवनवायमान, नवकिशोर-आनन्द-विग्रहधारी आनन्द के एक मात्र सुख भण्डार, सन्तोष के अक्षय कोषागा ॥ ३ ॥ गोपांगनाओं के नवीन आनन्द रूप, परम आनन्द निविड आश्रय, वृन्दावन के चन्द्रमा, व्रज में आनन्द के नवी अंकुर ॥४॥ नयनों के आनन्द-कुसुम,व्रज के महान् भाग्यफल उदय प्राप्त, क्षण क्षण में अत्यन्त सुख को देने वाले, मोह मधुर कान्ति वाले ॥ ५ ॥

सुधा के संचित निर्यास, (सार निचोड़) सुन्दर, श्याम विग्रह, नवीन यौवन से युक्त, श्यामामृत रस के सागर ॥ ६ ॥

इन्द्रनीलमणि के सदृश स्वच्छ, मथे हुए अंजन के तु चिक्कण, नीलकमल की तरह सुखमय स्पर्श वाले, स्निग्ध मे के सदृश सुन्दर ॥ ७ ॥

कपूर-अगुरु-कस्तूरी-कुंकुम-चन्दन से धूसर अंग वा

मत्तालिविलसत्पारिजातपुष्पावतंसकः ।
आननेन्दुजितानन्तपूर्णशारदचन्द्रमाः ॥ ६ ॥
श्रीमल्ललाटपाटीरतिलकालकरञ्जितः ।
लीलोन्नतभ्रूविलासो मदालसविलोचनः ॥ १० ॥
आकर्णरक्तसौन्दर्य्यलहरीदृष्टिमन्थरः ।
घूर्णायमाननयनः साचीक्षणविचक्षणः ॥ ११ ॥
अपांगिंगितसौभाग्यतरलीकृतचेतनः ।
ईषन्मुद्रितलोलाक्षः सुनासापुटसुन्दरः ॥ १२ ॥
गण्डप्रान्तोल्लसत्स्वर्णमकराकृतिकुण्डलः ।
प्रसन्नानन्दवदनो जगताल्हादकारकः ॥ १३ ॥

सुकुञ्चित केशों में शोभायमान, मनोहर मयूरपुच्छ धारी ॥८॥

मत्त भ्रमरों से शोभित पारिजात पुष्पों के अवतंस (शिरोभूषण) में धारणकारी, मुखचन्द्र से अनन्त परिपूर्ण शारद चन्द्रमा को जय करने वाले ॥ ६ ॥

चन्दन-तिलक-अलकावली से रञ्जित, शोभायमान ललाट वाले, लीलाओं से उन्नत भ्रू विलासधारी, मद में अलस नेत्र वाले ॥१०॥ कर्णपर्यन्त लम्बायमान तथा रक्तिमा से युक्त सुन्दरता की लहर रूप किञ्चित् अलस संयुक्त दृष्टि वाले, घूर्णायमान नयन वाले, तिरछे दृष्टिपात में विचक्षण ॥ ११ ॥

अपांग के इंगित (इसारा) सौभाग्य से चेतन अचेतन सब को चञ्चल करने वाले, कुछ मुदे हुए चञ्चल नेत्र कमल वाले, सुन्दर नासिका वाले ॥ १२ ॥

गण्डों के प्रान्तभाग (किनारा) में उल्लास प्राप्त सुवर्णमय मकराकार कुण्डलों के धारण करने वाले, आनन्दमय प्रसन्न वदन कमल वाले, जगत् आल्हादकारी ॥ १३ ॥

सुस्मेरामृतसौन्दर्य्यप्रकाशीकृतदिङ्मुखः ।
सिन्दुरारुणसुस्निग्धमाणिक्यदशनच्छदः ॥ १४ ॥
पीयूषाधिकमाध्वीकसूक्तिश्रुतिरसायनः ।
त्रिभंगललितस्तिर्य्यग्ग्रीवस्त्रैलोक्यमोहनः ॥ १५ ॥
कुञ्चिताधरसंसक्तकूजद्वेणुविनोदकः ।
कंकणांगदकेयूरमुद्रिकादिलसद्भुजः ॥ १६ ॥
स्वर्णसूत्रसुविन्यस्तकौस्तुभामुक्तकन्धरः ।
मुक्ताहारोल्लसद्वक्षः स्फुरच्छ्रीवत्सलाञ्छनः ॥ १७ ॥
आपीनहृदयो नीपमालावान् वन्धुरोदरः ।
सम्वीतपीतवसनो रसनाविलसत्कटिः ॥ १८ ॥
अन्तरीणघटीबन्धः प्रमदान्दोलिताञ्चलः ।
अरविन्दपदद्वन्द्वक्वणत्कारितनूपुरः ॥ १९ ॥

मन्दहास्य युक्त सौन्दर्य्यामृत से समस्त दिशाओं को प्रकाशकारी, सिन्दूर तथा स्निग्ध माणिक्य के तुल्य अरुण ओष्ठ वाले ॥१४॥ पीयूष तथा माध्वीक से अधिक कर्णरसायन वचन को बोलने वाले, त्रिभंग के कारण ललित तथा तिरछे ग्रीवा से युक्त, तीन लोक का मोहनरूप ॥ १५ ॥ सकुञ्चित अधर में संलग्न वेणुवाद्य के विनोदी, कंकण-अंगद-केयूर-मुद्रिकादि से शोभायमान भुज वाले ॥ १६ ॥ सोनों के सूतों से गुंथा हुआ कौस्तुभमणि को हृदय में धारण करने वाले, वक्षःदेश में मुक्ताहार के धारणकारी, श्रीवत्स चिह्न से शोभित ॥१७॥ सम्यक् विशाल हृदय वाले, नीप (कदम्ब) माला धारी, त्रिवली रेखा से युक्त मनोहर उदर वाले, पीतांबर से वेष्टित, कोमल पट्ट डोरों के द्वारा कसा हुआ कमर से शोभित ॥ १८ ॥ भीतर कसा हुआ चरण पर्य्यन्त लम्बायमान चंचल दुपट्टा पहरने वाले, युगल चरण कमलों में शब्दायमान नूपुर धारी ॥ १९ ॥

पल्लवारुणमाधुर्य्यसुकुमारपदाम्बुजः ।
नखचन्द्रजिताशेषदर्पणेन्दुमणिप्रभः ॥ २० ॥
ध्वजवज्राकुंशाम्भोजराजच्चरणपल्लवः ।
त्रैलोक्याद्भुत-सौन्दर्य-परिपाकमनोहरः ॥ २१ ॥
साक्षात्केलिकलामूर्त्तिः परिहासरसार्णवः ।
यमुनोपवनश्रेणीविलासी व्रजनागरः ॥ २२ ॥
गोपांगनाजनासक्तो वृन्दारण्यपुरन्दरः ।
आभीरनागरीप्राणनायकः कामशेखरः ॥ २३ ॥
यमुनानाविको गोपीपारादरकृतोद्यमः ।
राधावरोधनरतः कदम्बवनमन्दिरः ॥ २४ ॥
व्रजयोषित्सदाहृद्यो गोपीलोचनतारकः ।
जीवनानन्दरसिकः पूर्णानन्दकुतूहलः ॥ २५ ॥

कोमल नवीन पत्ते के सदृश अरुणवर्ण माधुर्य्यमय सुकुमार चरण कमल वाले, नख चन्द्रमा से समस्त दर्पण-चंद्र-मणि प्रभा को जयकारी ॥ २० ॥ ध्वज-वज्र-अंकुश-कमलादिक चिन्हों से शोभायमान चरण पल्लव वाले, तीन लोक में अद्भुत सौन्दर्य्य परिपाक से मनोहर अर्थात् सौन्दर्य्य के सागर रूप ॥ २१ ॥ केलिकला की साक्षात् मूर्त्ति, हास्य-परिहास रस में सागर रूप, यमुना के उपवनों में विलास करने वाले, व्रजनागर ॥२२॥ गोपांगनाओं में आसक्त, वृन्दावन के पुरन्दर, गोपनागरीगण के प्राणनायक, कन्दर्प चूड़ामणि ॥२३॥ यमुना में लीला नाविक रूप, नाव के द्वारा गोपियों को पार करने में उद्यमशील, श्रीराधिका के (मुझको) अवरोध करने में रत, कदम्बबन के मन्दिर में निवास करने वाले ॥ २४ ॥ निरन्तर व्रजगोपियों के मनोहर, गोपियों के नयनों में तारा रूप, रसिकों के आनंदमय जीवन रूप अर्थात् आनंदमय परम रसिक शेखर, परिपूर्ण

गोपीकाकुचकस्तूरीपंकिलकेलिलालसः ।
अलक्षितकुटीरस्थो राधासर्व्वस्वलम्पटः ॥ २६ ॥
वल्लवीवदनाम्भोजमधुमत्तमधुव्रतः ।
निगूढ़रसवैदग्ध्यचित्ताल्हादकलानिधिः ॥ २७ ॥
कालिन्दीपुलिनानन्दी क्रीड़ाताण्डवपण्डितः ।
आभीरिकाजनानंगरंगभूमिसुधाकरः ॥ २८ ॥
विदग्धगोपवनिताचित्ताकूतविनोदकः ।
नवोपायनपाणिस्थगोपनारीगणावृतः ॥ २९ ॥
वाञ्छाकल्पतरुः कामकलारसशिरोमणिः ।
कोटिकन्दर्पलावण्यः कोटीन्दुललितद्युतिः ॥ ३० ॥
जगत्त्रयमनोमोहकरो मन्मथमन्मथः ।
गोपसीमन्तिनीशश्वद्भावापेक्षापरायणः ॥ ३१ ॥

आनद म कौतुकी, गोपियों के कुचकमल लग्न मृगमदरस से लिप्त ॥ २५ ॥ केलिरस में लालस, अलक्षित भाव से कुञ्ज कुटीर में रहने वाले, राधा के सर्वस्व लुण्ठन करने में चतुर ॥ २६ ॥ गोपियों का वदन कमल के मधु रस में मत्त भ्रमर, निगूढ़ विहार रस में रसिक तथा मानस आल्हादकारी चन्द्रमा स्वरूप ॥२७॥ यमुना के पुलिन में आनंद प्राप्त, ताण्डव - क्रीड़ा में पण्डित, गोपीगण के अनंग रंगशाला में चन्द्रमा रूप ॥ २८ ॥ विदग्ध गोपांगनाओं के चित्ताभिलाष के विनोदी, हाथों में नवीन उपायन (उपहार) धारणकारिणी गोपनारियों से परिवेष्टित ॥ २९ ॥ वाञ्छा के कल्पतरु, कामकला रस के शिरोमणि, कोटि काम के तुल्य लावण्य वाले, कोटि चंद्रमा के सदृश मनोहर कान्तिधारी ॥ ३० ॥ तीन जगत् के मन को मोहन करने वाले, मन्मथ के मन को भी मथने वाले, निरन्तर गोपसीमन्तिनियों के भाव का आस्वादन करने में रत ॥ ३१ ॥

नवीनमधुरस्नेह प्रेयसी प्रेम-सञ्चयः ।
गोपीमनोरथाक्रान्तनाटयलीलाविशारदः ॥ ३२ ॥
प्रत्यंगरभसावेशः प्रमदाप्राणवल्लभः ।
रासोल्लास-मदोन्मत्तो राधिकारतिलम्पटः ॥ ३३ ॥
हेलालीलारतिश्रान्तिस्वेदांकुरांचिताननः ।
गोपीकाङ्कालसः श्रीमान्मलयानिलसेवितः ॥ ३४ ॥
इत्येवं प्राणनाथस्य प्रेमामृतरसायनम् ।
यः पठेच्छ्रावयेद्वापि स प्रेम्णि प्रमिलेद्धुवम् ॥ ३५ ॥
इति श्रीमद्गौरचन्द्रविरचितं प्रेमामृतरसायनं स्तोत्रम् ।

(३) श्री श्री राधारसमञ्जरी

कुचकलशभरार्त्ता केशरीक्षीणमध्या
विपुलतरनितम्बा पक्वबिम्बाधरोष्ठी ।
प्रणयमयिवयस्या स्कन्धविन्यस्तहस्ता
निधुवनरसपुञ्जं याति राधा निकुञ्जम् ॥ १ ॥

नवीन मधुर स्नेह परायण प्रेयसीगणों के प्रेम महाधन का सञ्चयरूप, गोपियों के मनोरथ आक्रान्तकारी नाटयलीला में परम पण्डित ॥३२॥ प्रत्येक अंग को रसावेश में पूर्णता प्राप्त करने वाले अर्थात् अंग प्रत्यंग रसावेश में परम मनोहर, प्रमदागण के प्राणवल्लभ, रासोल्लास मद में उन्मत्त, राधिका के रतिलम्पट ॥ ३३ ॥ हेला-लीला-रतिश्रम से उत्पन्न धर्मांकुर के द्वारा व्याप्त तथा शोभायमान वदन कमल वाले, गोपिका के अंक में अलसप्राप्त, श्रीमान् , मलय पवन से सेवित ॥ ३४ ॥
इस प्रकार प्राणनाथ का प्रेमामृतरसायन स्तोत्र को जो पढ़ेगा व औरों को सुनावेगा उसे प्रेम महाधन की प्राप्ति होगी ॥३५॥

स्तन कलस भारों से पीडिता, सिंह के सदृश क्षीण कटि

रमणिरमणखेलारम्भसम्भावनीया
रतिरभसगभीराऽभीरनारीसु धीरा।
निकटविनयवद्धोद्धूतकांतप्रसादा
नरपतिवरपुत्री याति राधा निकुञ्जम् ॥ २ ॥
श्यामप्रेमविनोदिनी मधुरिमाधाराधरे स्मेरिणी
गौरी प्रेमवती शुभा च सुभगा प्रेमाब्धिसम्बर्द्धिनी।
गण्डे मण्डितकुण्डला कटितटे धत्ते मुदा किंकिणीं
लीला कांचनदेहिनी विजयते वृन्दाबनस्थायिनी ॥ ३ ॥

वाली, अति विपुल नितम्बशालिनी, पक्के बिम्बफल के सदृश अधर ओष्ठ वाली, श्रीराधा आज प्रणयशालिनी सखी के कंधे पर हस्त कमल रखती हुईं निधुवन (सुरतक्रीड़ा) रस के सागर निकुञ्ज के लिये जा रहीं हैं ॥ १ ॥

रमणियों के रमण प्राणवल्लभ श्रीकृष्ण के साथ खेला रस का प्रारम्भ करने की अभिलाषिणी, रति के वेग से गंभीर हृदय गोपांगनाओं में धीरा, निकट में स्थित विनय वद्ध उन्मत्त कान्त को प्रसन्नता करने वाली, श्री वृषभानु की वरनन्दिनी श्रीराधा निकुञ्ज के लिये जा रहीं हैं ॥ २ ॥

श्यामसुन्दर की प्रेम-विनोदिनी, मधुरिमा के आधार रूप श्री अधर में मन्दहास्य को धारण करने वाली, गौरांगी, प्रेममयी, शुभरूपा, सुभगा, प्रेम सागर को बढ़ाने वाली, गण्डों में कुण्डलों के स्पर्श से मनोहरा, प्रिय सुख के लिये कटि में किंकिणी धारिणी, लीलास्वरूपिणी, वृन्दावन में नित्य विराजमाना, सुवर्ण देहधारिणी, श्री राधिका विजय प्राप्त कर रहीं हैं ॥ ३ ॥

शुद्धस्वर्णविडम्बिनी परिलसल्लावण्यसन्मोहिनी
नानारत्नविलासिनी मधुरिमाधाराधरे वंशिनी।
कृष्णप्रेमतरंगिणी निरवधि प्रेमामृतालापिनी
श्यामप्रेमविनोदिनी विजयते राधा सुधादेहिनी ॥ ४ ॥
राधेयं नवयौवनाढ्यवयसोल्लासेन सानन्दिता
सुस्मेराधरविम्बचन्द्रवदना हेमाद्रिकान्त्युज्ज्वला।
नित्यं कल्पतरोस्तले निवसिता वेशेन भूषामयी
नानाशक्तिसमन्विता वितनुते प्रेमप्रवृत्तिं सदा ॥५॥
नानागीतविलासनृत्यरभसैरापूरितं दिङ्मुखं
गौरी चन्द्रमुखी सरोजनयनी कन्दर्पसम्मोहिनी।

विशुद्ध सुवर्णवर्ण को विडम्बन करने वाली, शोभायमान अंगलावण्य से सर्व मोहिनी, नाना प्रकार रत्नों से विभूषिता, प्रियसुख आस्वादन के लिये मधुरिमा के आधार श्री अधर में बंशी धारण करने वाली, श्रीकृष्ण प्रेम की तरंगिणी (नदी) रूपा, निरन्तर प्रेमामृत आलाप कारिणी, श्यामसुन्दर की प्रेम विलासिनी, अमृत देह रूपिणी श्रीराधा विशेष रूप से जय प्राप्त कर रहीं हैं ॥ ४ ॥

नवीन यौवन से युक्त वयः के उल्लास से आनन्दिता, मन्दहास्य से युक्त अधर विम्ब चन्द्र मुख वाली, सुवर्ण पर्वत के सदृश कान्ति से परम उज्वला, निरन्तर बृन्दाबन कल्पतरु के तलदेश में वास करने वाली, नाना प्रकार भूषणों से विभूषिता, समस्त शक्तियों का आश्रय स्वरूपा वही श्रीराधा सदा सर्वदा प्रेमविलास का विस्तार कर रहीं हैं ॥ ५ ॥

जो नाना प्रकार गीत-विलास-नृत्यों के वेग से सकल दिशाओं को परिपूर्ण कर रहीं हैं वही गौरांगी, चन्द्रमुखी,

रम्भाचारुनितम्बिनी रसवती प्रेमामृतोद्गारिणी
राधा काञ्चनदेहिनी विजयते वृन्दावनस्थायिनी ॥ ६ ॥
वक्त्रे चन्द्रविलासिनी नयनयोः प्रेम्णा कृपापांगिणी
विम्बोष्ठाधरदन्तपंक्तिविलसन्मुक्तावली चन्द्रिका ।
दोर्दण्डांघ्रिसमुल्लसत्पुलकिनी सन्न्यासविन्यासिनी
राधा काञ्चनदेहिनी विजयते कारुण्यकल्लोलिनी ॥ ७ ॥
या श्रीः सत्यवती स्वयं भगवती प्रेमानुसम्वादिनी
या नित्या मधुभाषिणी सुखमयी सन्तोषरत्नाकरी ।
या राधा सुधियां सुधारसमयी कृष्णप्रिया दुर्लभा
सा जीयात् क्षितिमण्डले प्रियतमा वृन्दावनावासिनी ॥८॥

कमलनयना, कन्दर्प को मोहित करने वाली, रम्भा के सदृश मनोहर नितम्बधारिणी, रसमयी, प्रेमामृत का उद्गार करने वाली, वृन्दावन विहारिणी, सुवर्ण - देहवाली श्री राधा विजय प्राप्त करती हैं ।। ६ ।।

जिनके मुख में चन्द्रमा तथा नयनों में प्रियता के साथ कृपा कटाक्ष निरन्तर विलास कर रहा है और जिनके बिम्बोष्ठ-अधर तथा दन्तावली में मुक्तावली और चन्द्रिका विलास करती रहती है जिनके भुजदण्ड व चरण कमल अत्यन्त उल्लास से पुलकायमान हैं तथा जिनके अंग प्रत्यंग के संस्थान सम्यक् रूप से गठित है वही कृपातरंगिणी सुवर्ण सदृश शरीर वाली श्रीराधा विजय प्राप्त करती हैं ।। ७ ।।

जो साक्षात् श्रीलक्ष्मी तथा सत्यवती रूपा और प्रेम-स्वरूपिणी, सुखमयी तथा सन्तोष के रत्नाकर रूपिणी हैं जो रसिक प्रेमी सज्जनों के लिये सुधारस की वर्षा करने वाली अर्थात् रसिकों की जीवन स्वरूपा है, जो श्रीकृष्ण की परम-

प्रेमोद्गारिदृगन्तवीक्षणलतामाजीरयन्तीं परां
नानाभावविकासिनीं सुमधुरां स्मेरातिकान्त्याननाम्।
प्रोद्यत् प्रोद्युतिशातकुम्भलतिकादेहां मनोहारिणीं
श्रीमन्नागररासरत्नजलधिं श्रीराधिकामाश्रये ॥ ९ ॥
सेयं विभाति परिनिन्दितहेमकान्तिः
राधा विनिन्दितसुधामधुरैर्वचोभिः।
प्रेम्णा वशेन गुरुणा नवरत्नवेशं
यत्किङ्किणी कटितटे परिरौति चित्रम् ॥ १० ॥
नवीना श्रीराधा नवरुचिरपूर्णेन्दुवदना
नवीना प्रेमाभिन्नवनवसखीभिः परिवृता।

प्रिया तथा क्षितिमण्डल में अर्थात् ब्रह्मा की सृष्टि में परम दुर्लभा श्रीवृन्दावन विहारिणी हैं उन्हीं श्रीराधा की जय हो ॥८॥

प्रेम के उद्गारकारी नेत्राञ्चल वीक्षण के द्वारा अर्थात् कटाक्ष पात से कोटिन दिव्य कल्पलताओं की सृष्टि करने वाली, नाना प्रकार के भावों को विकाशकारिणी, अतिमधुरा, करोड़ों कामदेवों की कान्ति के आक्रमणकारी मुख वाली, शोभायमान विद्युत् तथा सुवर्णलता के सदृश शरीर धारिणी, मनोहारिणी, श्रीमन्नागर श्यामसुन्दर के रासविलास रूप रत्नों की रत्नाकर (सागर) रूपा श्रीराधिका को मैं आश्रय लेता हूँ ॥ ९ ॥

सोई वही सुवर्णकान्ति तिरस्कारिणी श्रीराधा अमृत निन्दि मधुर वचनों से विराजमाना हो रहीं हैं। आप अत्यन्त प्रेमावेश में नवीन रत्नों से अर्थात् पक्षान्तर में अष्टसात्विक महाभाव रूप नौ रत्नों से विभूषिता हैं, किन्तु श्रीरासेश्वरी के कटि देश में जो किंकिणी स्वगर्व्व सूचनार्थ शब्दायमान हो रही है यह अति आश्चर्य्य है ॥ १० ॥

नवं वृन्दारण्यं नवकिशलयालम्बिततरुं
नवीनं रासार्थं व्रजति नवरंगे निधुवनम् ॥ ११ ॥
गौरी पद्ममुखी कुरंगनयनी क्षीणोदरी वत्सला
संगीतागमवेदिनी सुखमयी तुंगस्तनी कामिनी ।
श्यामप्रेमविनोदिनी मधुरिमाधाराधरे स्मेरिनी
त्रैलोक्यैकनितम्बिनी विजयते राधा सुधादेहिनी ॥ १२ ॥
रासोल्लासविलासिनी नवलसत् सम्पूर्णचन्द्रानना
शुद्धस्वर्णविडम्बिकान्तिविलसत् वक्त्रेण व्याकुण्डला ।

नयी नयी रुचि से परिपूर्णा,प्रेममयी नव नव सखियों से नवीनरूप से परिवेष्टित नवीना श्रीराधा आज नूतन किशलय द्वारा समन्वित नव नव वृक्षों से परिपूर्ण नवीन बृन्दावन में निधुवन के लिये नवीन रासार्थ नव नव रंग में गमन कर रहीं हैं ॥ ११ ॥

गौरांगी, कमलमुखी, हरिणनयना, क्षीणकटिवाली, कृपा वितरण में वात्सल्यमयी, संगीतशास्त्र जानने वाली अर्थात् संगीतकला में परम पण्डिता, सुखमयी, उच्च स्तनवाली, कामिनी अर्थात् निरन्तर श्रीकृष्ण की कामना करने वाली, श्यामसुन्दर के प्रेम विनोद करने में परमचतुरा, मधुरिमा की आधाररूपा, अधर में मन्दहास्य धारिणी, त्रैलोक्य में एक मात्र रमणी अर्थात् रमा-शची-पार्व्वती आदिक त्रैलोक्य मुकुटमणि रमणियों से वन्दिता, अमृत शरीर वाली श्रीराधा विजय प्राप्त कर रहीं हैं ॥ १२ ॥

रास में उल्लास से विलास करने वाली, नवीन शोभायमान परिपूर्ण चन्द्रमा के सदृश मुख के धारणकारिणी,निन्दित विशुद्ध सुवर्ण कान्ति से विलसित मुखकमल वाली, आवेग से

लावण्यामृतमञ्जरी रसकलालोलाब्धिहिल्लोलिनी
राधा प्रेमविनोदिनी विजयते नित्यस्थलस्थायिनी ॥ १३ ॥
उत्तुंगस्तनभारभंगुरतनू विद्युच्छटाकच्छविः
श्रोण्यां नीलदुकूलिनी मृदुपदाम्भोजे स्फुरन्नूपुरा ।
सुस्मेराधरचन्द्रकान्तिवदना कन्दर्पदर्पांकुरा
प्रेमान्धा मदमन्थरा विजयते कृष्णप्रिया राधिका ॥ १४ ॥
उन्मीलन्नवयौवना मृदुतरोत्फुल्लाब्जसालंकृता
सुश्रोणीभरभंगुरा स्मरभरस्मेराधरा मेदुरा ।
लीलाकन्दुकवासिनी प्रियसखीस्कन्धस्फुरत्पालिका
श्यामा श्यामसुहृत्तमा विजयते प्राणाधिका राधिका ॥ १५ ॥

चञ्चल कुण्डलों को कानों में धारणकारिणी, लावण्यसुधा की मञ्जरीरूपा, रसकला से चञ्चल प्रेम सागर को अधिक हिलाने वाली, प्रेमविनोदिनी, नित्य निकुञ्ज - विहारिणी श्रीराधा विजय प्राप्त हो रहीं हैं ॥ १३ ॥

उच्च स्तनों के भार से नम्रा, विद्युतुच्छटा के सदृश मनोहर सुवर्णच्छवि को धारणकारिणी, नीलाम्बर से वेष्टिता, कोमल चरण कमल में शोभायमान नूपुर धारण करने वाली, मन्दहास्य से युक्त अधर तथा चन्द्रमा की कान्ति के सदृश वदन धारिणी, कन्दर्प की दर्पांकुर रूपिणी, अर्थात् (कन्दर्प में जो अभिमान है सो इन्हीं की दृष्टिमात्र से है) प्रेमान्धा अर्थात् प्रियतम के प्रेमवेग से आत्मानुसन्धान रहिता, मदमन्थरा, कृष्ण-प्रिया श्रीराधिका बिजय प्राप्त कर रहीं हैं ॥ १४ ॥

उत्थित नव यौवन वाली, अति कोमल उत्फुल्ल कमलों से विभूषिता, श्रोणी के भार से नम्रा, अप्राकृत कन्दर्प आवेग से युक्त, मन्दहास्य को अधर में धारण करने वाली, स्निग्ध हृदया,

वृन्दावनान्तरचरी सुरपुष्पगुच्छं
संभिन्दती मदनमोदितदीर्घनेत्रा ।
कर्णे रसालमुकुलं स्तवकं वहन्ती
श्यामाङ्गसङ्गमवती जयतीह राधा ॥ १६ ॥
सैवेयं परिभाति चञ्चलरुचिं जित्वा जगन्मोहिनी
अत्यन्ताद्भुतसुन्दरी जितसुधावाक्यामृता राधिका ।
ईषद्धास्यमुखी कुरंगनयनी गौरी सुधासारिणी
प्रेमानन्दविलासिनी वितनुते प्रेमप्रवृत्तिं मुहुः ॥ १७ ॥

लीला कन्दुकधारिणी, प्रिय सखी के कन्धे पर अपनी भुजलता अर्पणकारिणी, श्यामा, श्यामसुन्दर के सुहृत्तमा, प्राणाधिका श्री राधिका की विजय हो ॥ १५ ॥

वृन्दावन के बीच में निरन्तर विचरण करने वाली, कल्प-वृक्षों के पुष्पों से स्तवक रचनाकारिणी, मदन के आवेग में घूर्णायमान दीर्घनेत्रों से युक्ता, श्यामसुन्दर के साथ संगम प्राप्त करने वाली श्रीराधा कानों में आम्रवकुल के स्तवक को धारण करती हुईं जय प्राप्त कर रहीं हैं ॥ १७ ॥

अत्यन्त अद्भुत सुन्दरी स्वरूपिणी, वचनामृत से सुधा जयकारिणी, गौरांगी, दिव्यामृत प्रसारणकारिणी, प्रेमानन्द की विलासरूपिणी, जगन्मोहिनी, ईषत् हास्यमुखी, मृगनयनी वही श्रीराधिका विद्युत् कान्ति को जय करती हुईं विराजमाना हो रहीं हैं तथा बार बार सदा सर्वदा प्रेम प्रवृत्ति अर्थात् प्रेम महाधन का प्रचार कर रहीं है। यह सर्व समक्ष प्राणिमात्र में प्रेम महाधन का वितरण होने वाली बात का स्मरण करते व कराते हुए स्वयं राधिका-भाव-कान्ति धारणकारी कृष्णरूप गौरांगचन्द्र का गाम्भीर्यमय वचन है ॥ १७ ॥

श्रीराधा रतिभावमुग्धहृदया लोलायमानेक्षणा
पाणौ पुष्पधनुः स्रजं च दधती वृन्दावने क्रीडति ।
आश्चर्य्यैरभिचुम्बनै रतिकलालापैश्च सन्तर्पिता
गोविन्देन समं सखीगणवृता रासोत्सवं कुर्व्वती ॥ १८ ॥
श्यामालिङ्गितगौरदेहलतया मेघस्थविद्युच्छविं
निन्दन्ती विकचाम्बुजद्वयरुचिं पद्भ्यां तिरस्कुर्व्वती ।
सर्वासां रतिकेलिवृन्दचतुरस्त्रीणां शिरोभूषणं
श्रीमन्नागररासरत्नजलधिं श्रीराधिकामाश्रये ॥ १९ ॥
रासोल्लासविलासवल्गुरसिका सौन्दर्य्यसीमाश्रया
राधा प्रेममयी रतिञ्च कुरुते वृन्दावने सुन्दरी ।

रति-भाव-रस से मोहित हृदया, चञ्चलायमान नेत्र कमल वाली श्रीराधा, दिव्याद्भूत अनेकानेक चुम्बनादि रतिकला के प्रेमालापों से सन्तर्पिता तथा सखीगण से वेष्टित श्रीगोविन्द के साथ रासोत्सव लीला को करती हुई हाथों में पुष्पधनुः तथा मालाओं को रख वृन्दावन में क्रीड़ा कर रहीं हैं ॥ १८ ॥

श्यामसुन्दर के द्वारा आलिङ्गित गौर देहलता से मेघ-स्थित विद्युत् की छवि को निन्दित करती हुई तथा दोनों चरणों से खिले हुए दोनों कमलों की रुचि को तिरस्कार करती हुई रतिकेलि समूह में चतुर समस्त स्त्रियों की शिरोभूषणरूपा, श्रीमन् नागर श्यामसुन्दर के रासविलास रूप रत्नों की रत्नाकर (सागर) रूपिणी श्रीराधिका विराजमाना हैं मैं उन्हीं को आश्रय करता हूँ ॥ १९ ॥

रासोल्लास विलास की मनोहरता में परम रसिका, सौन्दर्य-सीमा की भी आश्रयरूपा, अर्थात् सौन्दर्य्य सीमा की सृष्टि का मूलाधार, प्रेममयी, सुन्दरी, श्रीवृन्दावन की देवता, सुधा की

श्रीकृष्णेन समं प्रफुल्लकुसुमैर्मत्तद्विरेफैर्युता
श्रीबृन्दावनदेवता विजयते राधा सुधामञ्जरी ॥ २० ॥
प्रेमानन्दविलासहासरसिका श्यामा सरोजेक्षणा
गोपीमण्डलमण्डिता वरतनुः सिन्दूरसीमन्तिनी ।
श्रीवृन्दावनरासकौतुककरा पीनस्तनोल्लासिनी
श्रीकृष्णस्य विनोदिनी विजयते श्रीराधिका भाविनी ॥ २१ ॥
उत्तप्तहेमरुचिरा बृषभानुकन्या
आकर्णनेत्रयुगला धृतपद्महस्ता ।
स्वर्णादिभूषणयुता नवलोमराजी
* संख्यासहस्रसखिभिर्जयतीह राधा ॥ २२ ॥

मञ्जरी रूपिणी, श्रीराधा श्यामसुन्दर के साथ मत्त भ्रमरों से शोभित प्रफुल्ल कुसुमों से युक्त श्रीबृन्दाबन में प्रेम रति रस लीला को विस्तार करती हुईं विजय प्राप्त कर रहीं हैं ॥ २० ॥

प्रेमानन्द के विलास हास में परम रसिका, श्यामा, कमलनयना, गोपीमण्डल से परिवेष्टिता, श्रेष्ठ शरीर वाली, सीमन्त देश में सिन्दूरधारिणी श्री बृन्दाबन में रस कौतुक विस्तार करने वाली, पुष्ट स्तनों से उल्लासिनी, श्रीकृष्णचन्द्र की क्रीड़ा स्वरूपिणी, भाविनी अर्थात् निरन्तर श्रीकृष्ण के सौन्दर्य्य, माधुर्य्य, लावण्य,सौस्वर्य्यों की भावना करने वाली, श्रीराधिका विजय प्राप्त हो रहीं हैं ॥ २१ ॥

तप्त अर्थात् विशुद्ध सुवर्ण कान्ति वाली, श्रीवृषभानुनन्दिनी, कर्णलम्बि नेत्र युगल वाली, हाथों में लीला कमल धारिणी, नाना प्रकार के सुवर्णादिक भूषणों से विभूषिता,

---

* त्रिन्यःसचित्रमकरीं कृतबेदी मध्या ॥

तप्तकाञ्चनगौराङ्गीं राधां वृन्दावनेश्वरीं ।
वृषभानुसुतां देवीं प्रणमामि हरिप्रियाम् ॥ २३ ॥
राधायाः कलधौतगौरकिरणैर्वृन्दावनान्तर्गताः
कूजन्मत्तमयूरकोकिलगणा भृङ्गाः कुरङ्गाः शुकाः ।
कृष्णस्याद्भुतहासरासरसिका प्रोल्लासमुग्धाशया
सान्द्रानन्दरसाकरी स्मितमुखी श्रीकृष्णगौरेश्वरी ॥ २४ ॥
गौरा भृङ्गकुरङ्गकोकिलगणाः गौराः शुकाःसारिकाः
गौराः सर्वमहीरुहाः वनचया गौराणि पुष्पाणि च ।
गौराश्चक्रकपोतबर्हिविहगाः गौरञ्च बृन्दावनं
राधादेहरुचाद्भुतं सखिबृनः श्यामोऽपि गौरो भवत् ॥ २५ ॥

नवीन रोमराजी से शोभायमाना राधा सहस्रो सखियों के सहित जय प्राप्त कर रहीं हैं ॥ २२ ॥

तप्त काञ्चन के सदृश गौराङ्गी, वृन्दावन की ईश्वरी, बृषभानुसुता, देवी, हरि की परम प्रिया, श्रीराधिका को प्रणाम करता हूँ ॥ २३ ॥

श्रीराधा के सुवर्ण गौर अङ्ग की किरणों के प्रभाव से वृन्दावन के अन्तर्गत शब्दायमान मत्त मयूरवृन्द, कोकिलगण, भ्रमर समुदाय, हरिणी समूह, शुक कुल समस्त ही गौरवर्ण हो रहे हैं। श्रीकृष्ण के अद्भुत हास्य रास में रसिका, उल्लसित मुग्ध आशय वाली, निविड आनन्द रस की सागर रूपिणी, स्मित-मुखी, ईश्वरी (स्वामिनी) श्रीराधा आज प्रियतम श्रीकृष्ण को गौरांगरूप कर रहीं हैं। यहाँ श्रीमन् महाप्रभु स्वयं अपना गौरांग स्वरूप होने का कारण प्रकट कर रहे हैं ॥ २४ ॥

आज श्रीराधिका की देह कान्ति से वृन्दावन के भ्रमर, भृंग, कोकिल समूह गौरवर्ण हो रहे हैं। शुक, सारिका समूह

राधादेहसुचारुगौरकिरणैरापूरितं दिङ्मुखं
बृन्दारण्यविहारकल्पतरवः गौराङ्गवर्णावृताः ।
गौराः कोकिलभृङ्गकेकीगवयाः सानन्दवृन्दावनं
राधादेहरुचाद्भुतं सखिवृतः श्यामोऽपि गौरो भवत् ॥ २६ ॥
मौलौ केकिशिखण्डिनी मधुरिमाधाराधरे स्मेरिणी
पीनांसे वनमालिनी हृदि लसत्कारुण्यकल्लोलिनी ।
श्रोण्यां पीतदुकूलिनी ; चरणयो र्मञ्जीरविन्यासिनी
लीला काञ्चनदेहिनी विजयते श्रीकृष्णसंजीवनी ॥ २७ ॥

भी गौरवर्ण होगये हैं । सकल बन, समस्त पुष्प, चक्रवाक,कपोत, पक्षी गण गौर रूप में आगये हैं । श्रीकृष्ण का परम प्रिय श्याम-छटा से व्याप्त श्रीवृन्दावन भी आज गौर वर्ण होगया है । अधिक क्या कहैं सखियों के साथ स्वयं श्रीश्यामसुन्दर भी गौरांग स्व-रूप होगये हैं ॥ २५ ॥

राधा अंग की सुचारु गौर छटा से समस्त दिशायें गौर वर्ण हो गयी हैं । बृन्दावन के विहार कल्पवृक्ष समूह भी गौर वर्ण से ढ़क गये हैं । आज आनन्दमय श्रीबृन्दावन में कोकिल, भ्रमर, गवय सब की यही दशा हो रही है अधिक सखियों से आवृत श्रीश्यामसुन्दर भी गौर होगये हैं ॥ २६ ॥

आज श्रीराधिका प्रिय हर्ष के लिए स्वयं श्री प्रियस्वरूप बनने की चेष्टा कर रहीं हैं । मस्तक में मयूरपुच्छ तथा मधुरिमा के आधार रूप श्रीअधर में वंशी, विशाल कन्धे में बनमाला, हृदय में कारुण्य की नदी, श्रोणिदेश में पीत वस्त्र, चरणों में मञ्जीर को धारण करती हैं । श्रीकृष्ण की जीवन रूपिणी, मूर्ति-मती काञ्चनदेह वाली, लीलामयी श्री राधिका इस प्रकार विजय प्राप्त कर रहीं हैं ॥ २७ ॥

सौन्दर्य्योत्सवकेलिपौरुषरसं गायन्ति ताः सुस्वरं
वीणावेणुमृदङ्गतालमहतीं सम्वादयन्त्योऽपि च।
राधा नृत्यति दक्षिणे रसवती चन्द्रावली वामतः
मध्ये श्यामलसुन्दरो रसकलामुद्दीपयन्नुत्तमाम् ॥ २८ ॥
अङ्गे गौरसुचन्द्रिका सुचरिते लावण्यभङ्ग्युत्सवा
श्यामप्रेमसुधानिलौ वयसि संतारुण्यलक्ष्मी स्वयं।
लावण्यैककला प्रमोहनपदं रूपं जगद्वैभवं
राधायाः समता न चास्ति निखिले ब्रह्मांडभाण्डे क्वचित् ॥२९॥
लीलालोलतरङ्गिणी नयनयोरानन्दकल्लोलिनी
कन्दर्पोद्गमधारिणी रसवती काञ्चीरणन्नूपुरा।

वे सब सखियाँ वीणा-वेणु-मृदंग-ताल-महती बजाती हुईं सौन्दर्य्य के उत्सव केलि पौरूप रस का गान कर रही हैं। दक्षिण में श्री राधिका तथा रसवती चन्दावली वाम भाग में नृत्य कर रही हैं। बीच में श्यामसुन्दरजी उत्तम रस कला का उद्दीपन करते हुए नृत्य कर रहे हैं ॥ २८ ॥

अंग में गौर छटा, चरित्र में लावण्य की लहर परम्परा, पवन में श्याम की प्रेमसुधा, वयःसञ्चार में स्वयं तारुण्य लक्ष्मी विलास कर रही है। श्रीचरण एक मात्र लावण्य की कलारूप तथा जगत् के वैभव स्वरूप सुन्दर रूप है। इस ब्रह्माण्डभाण्ड में अर्थात् ब्रह्मा की सृष्टि में कहीं भी श्रीराधा की समता नहीं है ॥ २९ ॥

लीला से चञ्चल तरंगिणी रूपिणी, नयनों में आनन्द सुरधुनि को धारण करने वाले, अप्राकृत कन्दर्प की संचार कारिणी, कलामयी, काञ्ची में शब्दायमान क्षुद्रघण्टिका को पहरने वाली, कृष्ण में आशक्त नयना, अर्थात् किञ्चित् रक्त

कृष्णाशक्तविलोचना सपुलका प्रोद्यत्कुचा शोभिता
गोपालीगणसेविता विजयते राधा सुधावर्षिणी ॥ ३० ॥

इतिश्रीमच्चैतन्यचन्द्रविरचिता श्रीराधारसमञ्जरी
समाप्ता ॥

(४) युगलपरिहारस्तोत्रम्

हे सौन्दर्य्यनिदान रूपगरिमन् माधुर्य्यलीलानट !
हे आश्चर्य्यविशेषवेशधर हे हे वंशिभूषविभो !
हे वृन्दाटविभूविलासिनि ! लसत्केलिकलाकौमुदि !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ १ ॥
हे हे कृष्ण व्रजेन्द्रनन्दन विभो हे राधिके श्रीमति !
हे श्रीमल्ललितादिसख्यसुखिते ! हे श्यामलाप्रेमदे !

व अलस नेत्रवाली, पुलकिनी, सुन्दर सुवृत्त कुच वाली, शोभायमाना, गोपांगनाओं से परिसेविता, सुधावर्षण - कारिणी, श्रीराधा विजय प्राप्त कर रही हैं ॥ ३० ॥

हे सौन्दर्य्य के निदान ! हे रूप के गौरव ! हे माधुर्य्य-लीला के नट नागर ! हे अद्भुत विशेष वेश समूह को धारण करने वाले ! हे वंशीविभूषित व्रज व्यापक ! हे वृन्दावन–भूमि विलासिनि ! हे शोभायमान केलिकला की कौमुदी रूपिणि ! हे श्रीराधे ! आप अपने श्री चरण में शरण अर्थात् सेवा - रस दीजिये और हे श्रीकृष्ण ! आप मेरी तृष्णा का नाश कीजिये अर्थात् दर्शनामृत प्रदान के द्वारा कृतार्थ करिये ॥ १ ॥

हे श्रीकृष्ण ! हे व्रजेन्द्रनन्दन ! हे सर्वव्यापक ! हे श्रीराधिके ! हे श्रीमति ! हे श्री ललितादि सखियों से सुख प्राप्त व उन्हें सुख देने वाली ! हे श्यामला-सखि को प्रेम देने

हे लीलारसलालसत्रिभंगीत्रय प्रेयसि
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ २ ॥
हे पीताम्बरशोभिताब्जकर हे हे नीलविचित्राम्बरे !
हे वंशीवटकेलिकौतुकपटो हे कुञ्जगेहेश्वरि !
हे श्रीरासविलासलम्पट गुरो ! हे सुन्दरि प्रीतिदे !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ३ ॥
हे जाम्बुनदनिन्दिसुन्दरतनो हे हे घनश्यामल !
हे हे पंकजपत्रनेत्रयुगले हे खञ्जनीलोचन !
हे चूडावेणिवद्धचामरकचे हे हारिणि स्वामिनि !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ४ ॥
हे हे शारदपूर्णचन्द्रवदने हे हे सुरम्यानन
हे श्रीवत्सांकितचारुचित्रहृदये ! हे चित्रलेखाञ्चिते !

वाली ! हे लीला रस लालस त्रिभंगी श्यामसुन्दर की प्रिये ! हे श्रीराधे चरण में शरण दीजिये और हे श्रीकृष्ण तृष्णा का नाश कीजिये ॥ २ ॥

हे पीताम्बर से शोभित ! हे हस्तों में कमल धारण करने वाले ! हे विचित्र नीलाम्बर धारिणि ! हे वंशीवट के केलि-कौतुक में परम पण्डित ! हे निकुञ्ज गृह की ईश्वरि ! हे श्री-रासविलास लम्पट के गुरु ! हे सुन्दरियों को प्रीति देने वाली ! हे श्रीराधे चरण में शरण दीजिये और हे श्रीकृष्ण ! तृष्णा का नाश कीजिये ॥ ३ ॥

हे सुवर्ण निन्दित सुन्दर शरीर वाली ! हे हे घनश्यामल ! हे हे कमल पत्र के सदृश नेत्र युगल वाली ! हे खञ्जनीलोचन ! हे चूडा-वेणी से बँधे हुए चौंर के तुल्य केशवाली ! हे मनो-हारिणि ! हे स्वामिनि ! हे श्रीराधे ! चरण में शरण दीजिये और हे श्रीकृष्ण ! तृष्णा का नाश कीजिये ॥ ४ ॥

हे विम्बाधरचारुचित्रचिबुके ! भ्रूभंगरम्यालिके !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ५ ॥
हे हे भानुसुतायशोमतिसुतौ रामानुज श्यामल !
हे नाथ व्रजचन्द्र गोकुलपते हे नागरीनागर !
हे सर्व्वस्वविलासिनीरतिपरे हे केशवामोदिनि !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ६ ॥
हे गान्धर्व्वे नटवरवपु र्मन्मथानन्दसिन्धो !
हे वैदग्ध्याधिकमधुरिमाधार हे प्राणनाथ !
हे रामा परमे परात्परपरीरम्भे सदोल्लासिनि !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ७ ॥

हे हे शरत् कालीन पूर्ण चन्द्र वदने ! हे हे अत्यन्त मनोहर आनन वाले ! हे श्रीवत्स चिन्ह से अंकित ! हे मनोहर विचित्र हृदय वाली ! हे चित्रलेखा सखि से युक्ते ! हे विम्बफल के तुल्य अधर वाले, हे मनोहर विचित्र चिबुक वाली, हे भ्रूभंग से मनोहर कपाल वाली ! हे श्री राधे ! चरण में शरण दीजिये और हे श्रीकृष्ण ! तृष्णा को नाश कीजिये ॥ ५ ॥

हे हे भानुनन्दिनि यशोदानन्दन ! हे रामानुज श्यामल ! हे प्राणनाथ ! हे व्रजचन्द ! हे गोकुलपते ! हे नागरि ! हे नागर ! हे मर्व्वस्व ! हे विलासिनि ! हे रतिपरायणे ! हे केशव के आनन्ददायिनि ! हे श्रीराधे चरण में शरण दीजिये और हे श्रीकृष्ण ! तृष्णा का नाश कीजिये ॥ ६ ॥

हे श्रीगान्धर्विके ! हे नटवरविग्रह ! हे मन्मथ के आनंद सागर ! हे वैदग्ध के राशि, हे मधुरिमा के आधार, हे प्राणवल्लभ, हे रमणि, हे सर्व्वश्रेष्ठ ! हे परात्पर श्रीकृष्ण से आलिङ्गिते ! हे निरन्तर उल्लासशालिनि ! हे श्रीराधे चरण में शरण दीजिये और हे श्रीकृष्ण ! तृष्णा का नाश कीजिये ॥७॥

कारुण्यामृतचन्द्र सुन्दरवपुर्लावण्यलीलानट !
हे गोपीगणनाथ गोत्रधर हे गोविन्द गोपाल हे !
हे गौरीगुरुगौरवाखिलगुरो गोपांगनावेष्टिते !
हे राधे चरणे विधेहि शरणं हे कृष्ण तृष्णां हर ॥ ८ ॥

हे हे कृपालुचरित ! ब्रजकल्पवृक्ष !
कारुण्यलेशकृत कातरलोकरक्ष ।
हे कृष्ण ! हे रमण ! हे भुवनैकनाथ !
हा हा कदातिकरुणा भवतोर्भवेन्मे ॥

इति श्रीमन्महाप्रभुमुखोद्गीर्णं
श्रीयुगलपरिहारस्तोत्रम् ॥

॥ युगलाष्टकं ॥

वृन्दावनविहाराढ्यौ सच्चिदानन्दविग्रहौ ।
मणिमण्डपमध्यस्थौ राधाकृष्णौ नमाम्यहं ॥ १ ॥

हे कारुण्यामृत के चन्द्रमा ! हे सुन्दरविग्रह ! हे लावण्य-लीला के नटराज ! हे गोपियों के नाथ ! हे गोवर्द्धन धारिन् ! हे गोविन्द, हे गोपाल, हे गौरांगीगणों के गुरु गौरव ! हे अखिल गुरो ! हे गोपाङ्गनाओं से परिवेष्टिते ! हे श्रीराधे ! अपने चरण में शरण दीजिये और हे श्रीकृष्ण ! तृष्णा का नाश कीजिये ॥८॥

हे हे कृपालु चरित्रवाले ! हे ब्रज कल्पवृक्ष ! हे करुणा लेश से ही कातरजनों के रक्षक ! हे कृष्ण ! हे रमण ! हे भुवन के नाथ ! हे श्रीराधिके ! कब आप दोनों की मेरे लिये अति-करुणा होगी ?

वृन्दावन में विहारशील, सत्-चित्-आनन्दमय विग्रह, मणिमय मंडप के बीच में विराजमान श्रीराधा कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥१॥ पीताम्बर तथा नीलाम्बर धारि, शान्त,

पीतनीलपटौ शान्तौ श्यामगौरकलेवरौ ।
सदा रासरतौ सत्यौ राधाकृष्णौ नमाम्यहं ॥ २ ॥
भावाविष्टौ सदा रम्यौ रासचातुर्य्यपण्डितौ ।
मुरलीगानतत्वज्ञौ राधाकृष्णौ नमाम्यहं ॥ ३ ॥
यमुनोपवनावासौ कदम्बनवमन्दिरौ ।
कल्पद्रुमवनाधीशौ राधाकृष्णौ नमाम्यहं ॥ ४ ॥
यमुनास्नानसुभगौ गौवर्द्धनविलासिनौ ।
दिव्यमन्दारमालाढयौ राधाकृष्णौ नमाम्यहं ॥ ५ ॥
मंजीररञ्जितपदौ नासाग्रगजमौक्तिकौ ।
मधुरस्मेरसुमुखौ राधाकृष्णौ नमाम्यहं ॥ ६ ॥
अनन्तकोटिब्रह्मण्डे सृष्टिस्थित्यन्तकारिणौ ।
मोहनौ सर्वलोकानां राधाकृष्णौ नमाम्यहं ॥ ७ ॥

श्याम तथा गौरांग स्वरूप, निरन्तर रासक्रीड़ा परायण, सत्यरूप श्रीराधा - कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥ यमुना के उपवन समूह में निवासकारि, कदम्ब के मन्दिर वाले अर्थात् कदम्बबन विहारी, कल्पबृक्ष मय श्रीवृन्दाबन के अधीश्वर, श्रीराधा कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ४ ॥ भावाविष्ट, सदा मनोहर, रासक्रीड़ा की चतुरता में परम पण्डित, मुरली गान में तत्त्वज्ञ, श्रीराधा कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥३॥ यमुना के जल में विहारशील, गोवर्द्धन विलासी, दिव्य मन्दार पुष्पों की माला से युक्त, श्रीराधा कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥५॥ मञ्जीर से शोभित चरण कमल वाले, नासाग्र में गजमौक्तिक धारि, मधुर मन्दहास्य से युक्त सुन्दर मुख वाले, श्रीराधा कृष्ण को नमस्कार करता हूँ ॥ ६ ॥ अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड के सृष्टि-स्थिति-संहार करने वाले, समस्त लोक

परस्पररसाविष्टौ परस्परगणप्रियौ ।
रससागरसंपन्नौ राधाकृष्णौ नमाम्यहं ॥ ८ ॥
इति श्रीमाधवेन्द्रपुरीचरणविरचितं युगलाष्टकं ॥

मोहितकारि, श्रीराधा कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ७ ॥ दोनों दोनों के रस में आविष्ट, दोनों दोनों के गणों में प्रिय, रस के सागर स्वरूप श्रीराधा कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ८ ॥

इति श्री माधवेन्द्रपुरी चरण विरचित युगलाष्टक का अनुवाद समाप्त ।

श्रीमन्महाप्रभुजी के स्मृति चिह्न समूह

कन्था (गूधड़ी) काष्ठपादुका, करुवा-(गम्भीरामठ व श्रीराधाकान्तमठ, पुरी)

वस्त्र-(श्रीमदनमोहन जी का मन्दिर, साइथिया, भद्रक-जिला, उत्कल)

काष्ठपादुका, वस्त्र, करुवा-(ग्रंथमन्दिर, श्रीभागवताचार्य्य-पाटवाड़ी, वराहनगर (कलकत्ता)

हस्ताक्षर-(देनूड, जिलावर्द्धमान व वराहनगरपाटवाडी-गन्थागार)

श्रीहस्तलिखित (चण्डीग्रन्थ)-(ग्राम - बुरुगाम, जिला श्रीहट्ट, बंगाल)

बैठा (पतवार, गंगापार होने का) और गीता हस्तलिखित-(कालना, श्रीगौरीदास पण्डितजी के मन्दिर) ।

श्रीगदाधरपण्डितगोस्वामी के द्वारा लिखित गीता के बीच में महाप्रभु के हस्ताक्षर-(भरतपुर, जिला-वीरभूम)

आसन, पीढ़ा-(श्रीराधारमणजी मन्दिर, वृन्दावन)

श्रीचरणचिन्ह-(पुरी श्रीजगन्नाथ जी मन्दिर के उत्तर दरवाजा के पास)

श्री अंगके समस्तचिन्ह-(आलालनाथजी मन्दिर, जगन्नाथ जी से ६।७ कोस पश्चिम में) (साष्टांग दण्डवत् करने का)

प्राचीनचित्र-(कुञ्जघाटा राजबाड़ी, जिला-मूर्शिदाबाद)

" (श्रीराधाकुण्ड, जान्हवा जी मन्दिर)

" भोंसला हाउस, बम्बई ।

" पुरी-राजबाड़ी ।

सेवित-प्राचीन श्रीविग्रह समूह

कालना-गौरीदास पण्डितजी के द्वारा स्थापित ।

नवद्वीप-'धामेश्वरमहाप्रभु' (श्रीविष्णुप्रिया देवी के द्वारा स्थापित)

वृन्दावन-(श्रीमुरारीगुप्त के द्वारा) बनखण्डि महादेवजी के पास ।

चाँपाहाटी-(वर्द्धमान) वाणीनाथजी के द्वारा स्थापित ।

पुरी राजबाडी-राजा प्रतापरूद्र के द्वारा स्थापित ।

चाँकदा-महेशपण्डितजी के द्वारा स्थापित "निताइगौर" नदीया ।

जसोडा-जगदीश पण्डितजी पाट-(गौरगोपालजी) नदीया जिला ।

काटोया-दास गदाधरजी के द्वारा स्थापित 'निताइगौर'(वर्द्धमान)

श्रीखण्ड-नरहरि सरकार महाशय के द्वारा सेवित । "श्रीगौरांग"

वृन्दावन गोविन्दजी के मन्दिर--काशीश्वर पण्डितजी के द्वारा स्थापित "श्रीगौरगोविन्द" ।

वगुडाजिला (गंगानगर) कंसारिघोषके द्वारा स्थापित'श्रीगौर' ।

खेतूड़ी,जि० राजसाही-नरोत्तमठाकुरमहाशय के द्वारा स्थापित । "लक्ष्मीविष्णुप्रिया"